ISSN: 0973-0583

नौटंकी : गीत संगीत की समावेशी कला

डॉ० अभय रंजन

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

e-mail: abhayhindi@gmail-com

शोध-सार

नौटंकी के जन्म को लेकर विभिन्न कथाएँ प्रचलित हैं। किसी भी कला के उद्भव के इतिहास को खँगालने का मकसद, उसके जन्म से जुड़ी कथाओं को जानने के साथ-साथ उसके भौगोलिक विस्तार को जानना भी होता है। सभी प्रमुख नौटंकी कलाकार उत्तर प्रदेश की सीमा में हीं दिखते हैं। इसके अलावा नौटंकी विधा की जो महत्वपूर्ण शैलियाँ हैं- कानपुरी और हाथरसी उनका केंद्र भी उत्तर प्रदेश हीं है। नथाराम शर्मा गौड़ नौटंकी के स्थान पर सांगीत शब्द का ही प्रयोग करते हैं। नौटंकी की कथा फलक बहुत व्यापक रहा है। इसमें प्रेम भक्ति से लेकर देशभक्ति तक का व्यापक फैलाव दिखाई पड़ता है। नौटंकी का कथा फलक बहुत व्यापक रहा है । इसमें प्रेम भक्ति से लेकर देशभक्ति तक का व्यापक फैलाव दिखाई पड़ता है।

शब्द कुँजी: लोककथाओं, शैलियाँ, चरित्र निर्माण, हाथरसी, लोकनाट्य, कला, प्रेम भक्ति, देशभक्ति

Received : 12/6/2025 **Acceptance : 28/7/2025**

नौटंकी का शाब्दिक अर्थ- स्वांग, तमाशा, बहरूपिया, रूप धारण करने वाला आदि है। 'अकबरनामा' और 'नौरंगेइश्क' मे भी 'नौटंकी' शब्द का उल्लेख मिलता है। 'आइन-ए-अकबरी' के जमाने से तमाशा और स्वांग करने वाले 'भगतवाज' के नाम से जाने जाते थे। इस काल की एक और प्रसिद्ध विधा थी ख्याल । कहा यह भी जाता है कि नौटंकी इन दोनों विधाओं का संयोजन था। नौटंकी के नामकरण के पीछे महेंद्र भानावत ने अपनी पुस्तक लोकनाट्य परंपरा और प्रवृतियों में अपना मत देते हुये कहा है कि नौटंकी ही संगीत है । नौटंकी के लिए अँग्रेजी मे gimmick शब्द का प्रयोग किया जाता है। रेख्ता डिक्शनरी मे नौटंकी का अर्थ साधारण जनता में अभिनीत होनेवाला एक प्रकार का लोकनाट्य जिसका कथानक प्राय: श्रृंगार और वीर रस से युक्त होता है, झूठी अदाएं दिखाने वाला, बहरूपिया फरेबी आदि है। कला पारखी विद्वानों में इसे लेकर मतभेद है। कुछ का मानना है कि यह संस्कृत शब्द 'नाट्य' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'नाटक', जबकि कुछ इसे मुल्तान से आया शब्द कहते हैं, जहाँ लोककथाओं को देसी अंदाज में आसान कविताओं के जरिए लोगों के हुजूम के सामने पेश किया जाता था। लिहाजा नौटंकी में आज भी कवित्त रूप मौजूद हैं। प्रमुख नौटंकी राजा हरिश्चंद्र, भक्त पूरनमल, नल दमयंती, श्रवण कुमार, सुलताना डाकू, मोरध्वज, ध्रुव चरित, शहजादी नौटंकी, आल्हा-उदल, उदल का विवाह, गरीब हिंदुस्तान, इंदल हरण, वीरांगना वीरमति, निहालदे, लक्ष्मण शक्ति, श्री श्याम चरित्र, श्री कृष्ण चरित्र, पद्म चरित्र, द्रोण, पर्व, भक्त पुरनमल, मानिकलंक, उषा-अनिरुद्ध, एकादशी वर्त कथा, हिंडोले की परी, श्री कृष्ण जन्म, भक्त प्रह्लाद, सम्राट अशोक, कृष्ण- सुदामा , सतीव्रता, सरवर नीर, सती चिंता, महारानी बीना, सती सावित्री, शकुंतला इत्यादि-इत्यादि प्रमुख है। नौटंकी के जन्म को लेकर विभिन्न कथाएँ प्रचलित हैं। किसी भी कला के उद्भव के इतिहास को खँगालने का मकसद, उसके जन्म से जुड़ी कथाओं को जानने के साथ-साथ उसके भौगोलिक विस्तार को जानना भी होता है। पंजाब की शहजादी से जुड़े किस्से से अगर इसका उदद्भव माने तो इसका विस्तार पाकिस्तान स्थित पंजाब तक पहुँच जाता है। वीकिपीडिया पर दी गयी जानकारी के अनुसार अगर चर्चा कि जाये तो इसका विस्तार नेपाल तक जाता है। परंतु जब इसके प्रायोगिक रूप या प्रचलन की बात करें तो इसका भूगोल उत्तर प्रदेश और इसके सीमापवर्ती क्षेत्रों तक सीमित नजर आता है। सभी प्रमुख नौटंकी कलाकार उत्तर प्रदेश की सीमा में हीं दिखते हैं। इसके अलावा नौटंकी विधा की जो महत्वपूर्ण शैलियाँ हैं- कानपुरी और हाथरसी उनका केंद्र भी उत्तर प्रदेश ही है। ऐसे में सवाल उठ खड़ा होता है कि नौटंकी अपने उद्गम स्थल अर्थात् पंजाब में हीं मृतप्राय क्यूँ हो गयी। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार

सिनेमा अपने उद्‌गम देश मे मृतप्राय अवस्था मे है। नौटंकी उत्तर भारत की प्रमुख मनोरंजक विधा रही है। नौटंकी और तमाशा की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लग जाता है कि उस दौर के अक्खड़ कवि कबीर को कहना पड़ा कि कथा कीर्तन को छोड़कर लोग स्वांग पर न्योछावर रहते थे। उहोने इस खेल के प्रति लोगो के अत्यधिक लगाव पर व्यंग्य करते हुये कहा था कि-

कथा होय तहँ श्रोता सोवे, वक्ता मुंड पचाया रे।

होय जहां कहीं स्वांग तमाशा, तनिक नींद न सताया रे।

नौटंकी का उदय- राम नारायण अग्रवाल के अनुसार- 'उत्तर मध्ययुग में उत्तरी भारत में ख्याल गायन की परंपरा खूब फली- फुली और इसी ख्याल परंपरा ने स्वांग या संगीत के रूप में जब-जब अपने को चौबोल गायकी से जोड़ा तो वह भगत, स्वांग या नौटंकी के नाम से विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्ध हुई।[1] नारायण भक्त की माने तो -'यह कहना कठिन है कि नौटंकी का मंच कब स्थापित हुआ और पहली बार कब इसका प्रदर्शन हुआ, किंतु यह सभी मानते हैं कि नौटंकी स्वांग शैली का ही एक विकसित रूप है। जयशंकर प्रसाद जी ने नौटंकी को नाटकी का अपभ्रंश रूप माना है। उन्होने लिखा है 'मेरा निश्चित विचार है कि भांड़ों के परिहास की नौटंकी के उदय से जुड़ी कथाओं का भी अपना इतिहास है। पर अक्सर ये लोक प्रचलित कथाएँ किसी निष्कर्ष पर तो नहीं पहुँचती हैं पर एक स्रोत का कार्य जरूर करती हैं। इन किंवदंतियों और विभिन्न प्रचलित मतों को ध्यान में रखकर इसके उदय पर विचार करें तो इसका जन्म स्वांग से नजर आता है। डॉ० रीता रानी पालीवाल के अनुसार नौटंकी का रूप अभी तक सांगीत रूपक है।[2] नथाराम शर्मा गौड़ नौटंकी के स्थान पर सांगीत शब्द का हीं प्रयोग करते हैं। नौटंकी का कथा फलक बहुत व्यापक रहा है। इसमें प्रेम भक्ति से लेकर देशभक्ति तक का व्यापक फैलाव दिखाई पड़ता है। गरीब हिंदुस्तान की में नाथाराम राम ने भारत को भूस्वामी बताते हुये जो चंद पंक्तियाँ कहीं हैं वो अपने आप में हीं देशभक्ति की मिसाल है:-

जो-जो आला देश है भूमंडल दरम्यान

सबका इक दिन था यही स्वामी हिंदुस्तान।[3]

नौटंकी केवल लोक प्रचलित कथानको का गायन नहीं है, बल्कि दसवीं- बारहवीं शताब्दी से लेकर इतिहास पुराणों के साथ साथ भारत के लोक चर्चित नायकों का चारित्रिक -दस्तावेज भी है। ऐसा दस्तावेज जो इतिहास के पन्नो में नहीं बल्कि जनता के दिमागों और दिलों में बसा था। यह जितना काल्पनिक है उतना उपजीव्य भी है । सूर्य प्रसाद दीक्षित ने लिखा है कि-'विषयवस्तु और शिल्प प्रयोग की दृष्टि से इन नौटंकियों में बड़ा वैविध्य दृष्टिगत होता है। इन कृतियों में प्राय: फारस की कथाओं, भारतीय ऐतिहासिक चरित्रों या वृतांतो धार्मिक आख्यानों, मुस्लिम बादशाहों-शहजादियों के रहस्य भरे अफसानों और लोक कथाओं की भरमार है। इसमें एन्द्‌र्जालिक चमत्कार से युक्त घटनाओं और कौतुक दृश्यों की अतिरंजना भी दिखायी देती है। उदाहरणार्थ 'रूह का आना और अन्तध नि हो जाना फरिश्तों द्वारा शहरयार का विष शमन शापवश खेरू का स्त्री रूप (गुलबदन)आदि।[4]

नौटंकी की शैलियाँ -नौटंकी की दो प्रमुख शैलियां हैं-एक है हाथरसी शैली और दूसरी है कानपुरी शैली। कानपुरी और हाथरस में पहले किस शैली का विकास पहले हुआ तो, इसके इतिहास से स्पष्ट हो जाता है कि हाथरस की शैली का विकास सबसे पहले हुआ। माना जाता है कि 1840 के आसपास हाथरस में स्वांग की परंपरा मौजूद थी और वसुदेव वासम का आखाड़ा इस पट्‌टी का पहला स्वांग अखाड़ा था। इस पट्‌टी में बाद के दिनों में निष्कलंक, तुर्रा और अंतिम बुर्स अखाड़ो का विकास हुआ कानपुर में हाथरस से अलग शैली विकसित की गयी। प्रयोक्ताओं ने इसके शिल्प, गायन, प्रदर्शन और इसके रूपगत ढांचे में अनेक परिवर्तन कर किए। हाथरस शैली के कलाकारो ने नौटंकी के स्थान पर 'संगीत' शब्द का प्रयोग किया तो कानपुर वालो ने नौटंकी शब्द का हीं ज्यादा प्रयोग किया। नौटंकी पर लिखी गई पुस्तकों और प्रदर्शन के इतिहास पर नजर दौड़ाने पर साफ स्पष्ट है कि नौटंकी की कथा कभी स्थिर नहीं रही है उसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। लोकनाट्य श्रुति परम्परा में होने के कारण निरंतर बदलाव की स्थिति में रहते हैं तो कई बार प्रयोग की वजह से परिवर्तन हो जाता है। नौटंकी में भी दर्शकों की रुचि और और सामाजिक अवस्था के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। कथानक और संगीत की दृष्टि से भी नौटंकी और दूसरी संगीत परंपरा में भेद है। देश-विदेश की प्रेम कथाओं, मध्ययुगीन गाथाओं और लोक-गाथाओं

जन प्रक्रियाओं, ऐतिहासिक घटना, महाकाव्यों और पुराणों के प्रसंगो से लेकर वीरता जुल्म की समसामायिक घटनाओं और सामाजिक राजनैतिक आंदोलनों को इनका विषय बनाया जाता है। चरित्र निर्माण की दृष्टि से हरिश्चन्द्र की नौटंकी का कथानक बहुत सुन्दर था। कथानक में सत्य था और कल्पनाशीलता भी थी। सुल्ताना डाकू का कथानक सुन्दर और प्रभावी था और वह गरीबों का नायक दिखाई पड़ता था। नौटंकी का हास्य पहले भी उदात्त नहीं था। हरेक मण्डली में जोकर होते हैं। वे प्राय: हास्यबोध से नासमझ होते हैं। इसलिए नौटंकी का हास्य व प्रहसन वाला भाग लगातार अश्लील होता गया। लोकजीवन को आनन्दित करने वाली यह विधा अब लगभग अश्लीलता के सहारे है और प्राय: लुप्त हो रही है। इसके इतिहास और विधा पर परिश्रमपूर्वक लिखी गयी तथ्यपरक पुस्तक होनी चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार आलोक पराड़कर ने 'कला कलरव' नाम से एक छोटी-सी सुन्दर पुस्तक लिखी है। इसमें नौटंकी पर छोटे-छोटे दो अध्याय हैं। नौटंकी भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित कला रही है। लोक मनोरंजक रही है। इस कला को हर तरह बचाये जाने की आवश्यकता है। नौटंकी में समान्यत: किसी कथा विशेष को ग्रहण करके उसके मार्मिक भावों को काव्यबद्ध किया जाता है ।[5]

नौटंकी का नायक समान्य रूप से शास्त्रीय नाटकों की तरह उच्चकुलीन नहीं होता है बल्कि जनसाधारण में लोकप्रिय कोई साधारण नायक होता है। वो जरूरी नहीं की शास्त्रीय नाटकों की नायकत्व की कसौटी पर खड़ा उतरता हो या यो धिरोद्त्त, धीरप्रशांत या धीर ललित की श्रेणी में आता हो। वो एक मजदूर, किसान, डाकू, लूटेरा या कोई भी लोक प्रसिद्ध व्यक्ति हो सकता है। नौटंकी डाकू सुल्ताना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इसका नायक एक लोक प्रसिद्ध डाकू है जिसको लेकर अनेक किंवदंतियाँ हैं । जिम कॉर्बेट ने अपनी प्रसिद्ध किताब 'माई इंडिया' के अध्याय 'सुल्ताना इण्डियाज रोबिन हुड' में सुल्ताना के चरित्र का आकलन करते हुए एक जगह लिखा है 'एक डाकू के तौर पर अपने पूरे करियर में सुल्ताना ने किसी निर्धन आदमी से एक कौड़ी भी नहीं लूटी. सभी गरीबों के लिए उसके दिल में एक विशेष जगह थी। जब-जब उससे चंदा माँगा गया उसने कभी इनकार नहीं किया, और छोटे दुकानदारों से उसने जब भी कुछ खरीदा उसने उस सामान का हमेशा दो गुना दाम चुकाया,' तो स्पष्ट है कि जनता इन लोकनायकों के जीवन को नौटंकी जैसी कलाओं में पुनर्जीवित होते देखना पसंद करते थे। सैकड़ों नौटंकियों की सूची है जिनमें नायक भारतीय लोक परंपरा में प्रसिद्ध रहा है ।[6]

सिद्धेश्वर अवस्थी ने इसकी वृहद व्याख्या करते हुये लिखा है-'हाथरसी शैली सुरावट, स्वर पर ठहराव तथा सम्पूर्ण कथानक के अनुरूप चयनित रागों के स्पर्श और बारीकियों से सजा पात्र जब अपनी भूमिका से संपादित करता है तब हाथरसी नौटंकी शैली सहजता से पहचाना जा सकता है।[17] कानपुरी शैली की नौटंकी का कलाकार अपनी भूमिका का नाटकीय तेवर से निर्वाह करता है । पारसी नाटकों का सम्पूर्ण रंगविधान कानपुरी नौटंकी के रगों में दौड़ता है। माना जाता है कि इसका जन्म ही पारसी नाटकों की आंक-बांक से हुआ है । हाथरसी नाटकों पर धरुपद की स्थित गायकी का प्रभाव है। कानपुरी के कलाकार इनकी गायकी को ठहराव की गायकी कहते हैं।[8] सिद्धेश्वर अवस्थी ने अपनी पत्रिका में इसकी गायन पद्धति पर विस्तृत चर्चा करते हुये लिखा है कि 'हाथरसी नौटंकी का गायक किसी कथ्य के प्रथम अथवा मध्य के वर्ण अथवा व्यंजन पर पहले दो तीन मिनट का टिकाव लेकर तब शब्द के शेष वर्णों को उजागर करता है। बृजवासी नौटंकी के रसिये गायक इसे लंबे टिकाव की मुक्त कंठ से सराहना करते हैं । सुर पर लंबी अवधि का ठहराव, गायक के लंबे समय के साधना का परिणाम माना जाता है किन्तु नाटकीयता की दृष्टि से सुर पर लंबें समय का ठहराव कभी-कभी हास्यस्पद स्थिति उत्पन्न कर देता है। मान लीजिये हाथरसी स्वांग या नौटंकी में किसी हरकारे को यह सूचना देनी है कि फलां गाँव घर अथवा खलिहान में आग लग चुकी है । ऐसी स्थिति में वह स्वर साधक हरकारा आग के पहले वर्ण 'आ' पर पहले सुर का लंबा टिकाव लेगा इसके बाद 'ग' का उच्चारण करेगा। अब आप स्वयं विचार करें कि सुर के इतने लंबे टिकाव की अवधि में गाँव घर खेत खलिहान का कितना हिस्सा प्रचंड अग्नि खो चुका होगा । कानपुरी शैली में ऐसे स्वर-व्यामोह को इसलिए कोई महत्व नहीं दिया जाता है।[9]

कानपुरी नौटंकी गायन में आनुपातिक रूप से शुद्ध राग और स्वर का महत्व है। सेहत अल्फाजी उच्चारण की शुद्धता, कथ्य की वजनदारी, जवाब सवाल में आंक-बांक

की तेज तर्रारी, भावाभिनय के साथ हर भूमिका की बेवाक अदायगी, इस शैली की अपनी खूबियाँ हैं। रूपांकन वेश-विन्यास पारसी रंगमंच का दृश्यविधान तथा पात्रों का अभिनयात्मक छंद गायन किसी भी कथानक को सजीव रूप में प्रस्तुत करने की दक्षता रखता है। गुलाब बाई ने हाथरसी गायन को 'ठहराव की गायकी' तथा कानपुरी नौटंकी को 'रंग की गायिका' की संज्ञा दी है।[10]

नौटंकी नक्कारा और संगीत और मंच हाथरसी और कानपुरी नौटंकी में देखा जाता है कि हाथरस में कथ्य गायन पूरा करने के बाद नक्कारे पर लयकारी का ठेका बजता है जबकि कानपुरी नौटंकी में हर पात्र के गायन के साथ नक्कारे की लयकारी चलती रहती है। पूर्व रंग प्रक्रिया दोनों में में समान रूप से दिखाई पड़ती है। इसके सहकारी वाद्यवृन्दों में 'नगाड़ा' अनिवार्य है। भगत का रंगमंच बल्लियों के स्तम्भ बनाकर आदमी से ऊँची बाड़ बाँधकर बनता है। बाड़ों की एक ऐसी वीथिका बनायी जाती है, जिसके बीच में स्थान खाली रहता है। इन बाड़ों पर अभिनेता एक स्थान से चलकर चारों और घूम आता है। हर ओर उसे चौबोला दुहराना पड़ता है। स्वाँग का रंगमंच सादा होता है। भूमि से कुछ ऊँचा एक लम्बे-चौड़े तख्त जैसा चारों ओर खुला होता है। प्रसिद्ध स्वाँगों में स्याहपोश, अमरसिंह राठौर, पूरनमल, हरिश्चन्द्र आदि गिने जाते हैं। नौटंकी के संगीत में नगाड़े का विशेष स्थान होता है। इसके अतिरिक्त ढोलक, डफली और हारमोनियम का भी प्रयोग किया जाता है। लोकनाट्य में सबसे लोकप्रिय नौटंकी रही थी। इसमें नाच-गाना, प्रतिरोध स्वर, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा सभी पक्ष थे। इसकी भाषा फारसी, उर्दू, खड़ी बोली का मिश्रित रूप थे। बीच-बीच में देशज शब्दों का प्रयोग भी अत्यधिक मात्रा में किया गया। कभी-कभी फारसी व देशज दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप भी मिलता है। यह नौटंकी शैली में लिखा बहुत ही लोकप्रिय नाटक है। इस नाटक के आरंभ में मंगलाचरण व अंत में नौटंकीकार के ऊपर एक छंद लिख कर उसे अभिव्यक्त किया गया । नौटंकी अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित थी।

नौटंकी की भाषा शैली और छंद नौटंकी की भाषा में हिंदी, उर्दू, लोकभाषा एवं स्थानीय, देशज बोलियों के शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। नौटंकी के संवाद गद्य और पद्य दोनों में बोले जाते हैं। पात्रों के अनुसार भाषा का रूप भिन्न नहीं होता। नौटंकी की भाषा लाक्षणिक ना होकर सरल और सुबोध होती है। नौटंकी में बहरेतबील, चौबोला, दोहा, लावणी, सोरठा, दौड़ आदि छंदों का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष:

नौटंकी का वर्तमान तकनीकी युग में भले ही खतरे में हो पर इसके संरक्षण की जिम्मेवारी सरकारों को लेनी चाहिए। नौटंकी के संगीत में नगाड़े का विशेष स्थान होता है। इसके अतिरिक्त ढोलक, डफली और हारमोनियम का भी प्रयोग किया जाता है। लोकनाटय में सबसे लोकप्रिय नौटंकी रही थी। प्रत्येक वर्ष इसका आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए। नौटंकी वो कला है जिसकी झलक हमें विदेशी ओपेरा में भी देखने को मिलता है। मुद्राराक्षस ने कहा था कि ब्रेख्त ने एपिक थिएटर की जो कल्पना की है, वो नौटंकी में पहले से मौजूद है। ऐसे में इस प्राचीन नौटंकी कला को संरक्षित किए जाने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1 श्री रामनारायन अग्रवाल, संगीत एवं लोकनाटक परंपरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

2 रीतारानी पालीवाल, रंगमंच का नया परिदृश्य, पृष्ठ -187 ,वाणी प्रकाशन दिल्ली

3 पंडित नाथा राम शरण शर्मा गौड़, सांगीत गरीब हिंदुस्तान श्री श्याम प्रेस हाथरस

4 सूर्य प्रसाद दीक्षित,अवध संस्कृति, विश्वकोश, वाणी प्रकाशन 2016

5 गूगल.कॉम

6 www-google.com

7 सिद्धेश्वर अवस्थी, नौटंकी कला, प्रथम संस्करण, 1994

8 वही पृष्ठ-4

9 वही पृष्ठ 4

10 वही पृष्ठ 4